WWW.CGGKADDA.COM

गोस्वामी तुलसीदास विरचित

श्री हनुमान चालीसा

अर्थ और पाठ विधि,

संकलन

।। दोहा ।।

श्रीगुरु चरन सरोज रज, निज मन मुकुरु सुधारि।
बरनउँ रघुबर बिमल जस, जो दायक फल चारि।।
बुद्धिहीन तनु जानिकै, सुमिरौं पवनकुमार।
बल बुद्धि बिद्या देहु मोहिं, हरहु कलेश बिकार।।

भावार्थ – श्रीगुरू महाराज के चरण–कमलों की धूल से अपने मन रूपी दर्पण को पवित्र करने के पश्चात् मैं श्रीरघुवीर के निर्मल यश को वर्णित करता हूं, जो चारों फल – धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को प्रदान करने वाला है। हे पवन कुमार! मैं आपका स्मरण करता हूं। आप जानते ही हैं कि मेरा शरीर और बुद्धि बहुत निर्बल है। मुझे शारीरिक बल, सद्बुद्धि एवं ज्ञान प्रदान कीजिए और मेरे क्लेश एवं विकारों को नष्ट कर दीजिए।

।। चौपाई ।।

जय हनुमान ज्ञान गुण सागर।
जय कपीस तिहुँ लोक उजागर।।
राम दूत अतुलित बल धामा।
अंजनि पुत्र पवनसुत नामा।।

भावार्थ – हे हनुमानजी! आपकी जय हो। आप ज्ञान और गुण के सागर हैं। हे कपीश्वर! आपकी जय हो! तीनों लोकों – स्वर्गलोक, भूलोक और पाताललोक में आपकी कीर्ति फैली हुई है।

हे राम के दूत! आप पवनसुत और अजंनी–पुत्र के नाम से भी जाने जाते हो। आपके बल की कोई तुलना नहीं की जा सकती।

महाबीर बिक्रम बजरंगी।
कुमति निवार सुमति के संगी।।
कंचन बरन बिराज सुबेसा।
कानन कुण्डल कुंचित केसा।।

भावार्थ – हे महावीर बजरंग बली! आप महान पराक्रमी हैं। आप कुमति का निवारण करके सुमति प्रदान करने में सहायक होते हैं। आप सुनहरे रंग, सुंदर वस्त्रों, कानों में कुंडल और घुंघराले बालों से शोभायमान हो रहे हैं।

हाथ बज्र अरु ध्वजा बिराजै।
काँधे मूँज जनेऊ छाजै।।
शंकर स्वयं केसरी नन्दन।
तेज प्रताप महा जग बन्दन।।

भावार्थ – आप हाथ में वज्र और ध्वजा थामे हुए हैं और आपके कंधे पर मूंज की जनेऊ शोभा प्रदान कर रही है। हे शंकर के अवतार, केसरी नंदन! आपके पराक्रम और यश की संसार–भर में वंदना होती है।

बिद्यावान गुणी अति चातुर।
राम काज करिबे को आतुर॥
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया।
राम लखन सीता मन बसिया॥

भावार्थ – आप विद्वान, गुणी और अत्यंत चतुर हैं तथा श्रीराम के कार्य करने हेतु सदैव तत्पर रहते हैं। आप श्रीरामचरित सुनने में आनंद रस प्राप्त करते हैं। श्रीराम, सीता और लक्ष्मण आपके हृदय में वास करते हैं।

सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा।
बिकट रूप धरि लंक जरावा॥
भीम रूप धरि असुर सँहारे।
रामचन्द्र के काज सँवारे॥

भावार्थ – आप सूक्ष्म रूप धारण करके सीताजी को दर्शन दिए और भयानक रूप धारण करके लंका को जला दिया। आपने विशाल रूप धारण करके राक्षसों का संहार किया और श्रीरामजी के कार्यों को सफल बनाया।

लाय सँजीवनि लखन जियाये ।
श्रीरघुबीर हरषि उर लाये ।।
रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई ।
तुम मम प्रिय भरतहिं सम भाई ।।

भावार्थ – हे महाबली हनुमान! आपने संजीवनी बूटी लाकर लक्ष्मणजी की प्राणरक्षा की, तब भगवान श्री रामचंद्रजी ने प्रसन्न होकर आपको गले से लगा लिया। श्रीरामचंद्र ने आपकी बहुत प्रशंसा करते हुए कहा कि तुम मेरे लिए भ्राता भरत के समान प्रिय हो।

सहसबदन तुम्हरो जस गावैं ।
अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं ।।
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीशा ।
नारद सारद सहित अहीशा ।।

भावार्थ – सहस्र मुख तुम्हारा यश–गान करते हैं। यह कहकर श्रीराम ने आपको गले से लगा लिया। श्रीसनक, श्रीसनातन, श्रीसनंदन, श्रीसनत्कुमार आदि मुनि, ब्रह्मा आदि देवता और नारदजी, सरस्वतीजी, शेषनागजी आदि सभी आपका गुणगान करते हैं।

जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते ।
कबि कोबिद कहि सकैं कहाँ ते ।।
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा ।
राम मिलाय राज पद दीन्हा ।।

भावार्थ – यमराज, कुबेर आदि सभी दिशाओं के रक्षक, कवि विद्वान, पंडित अथवा कोई भी प्राणी आपके यश को पूर्णत: वर्णित नहीं कर सकता। आपने सुग्रीवजी की श्रीराम से भेंट करवाकर उपकार किया, जिसके कारण उन्हें राजा का पद प्राप्त हुआ।

तुम्हरो मन्त्र बिभीषन माना ।
लंकेश्वर भए सब जग जाना ।।
जुग सहस्त्र जोजन पर भानू ।
लील्यो ताहि मधुर फल जानू ।।

भावार्थ – आपके मंत्र का विभीषणजी ने पालन किया जिसके कारण वे लंका के राजा बने, इस बात को सारा संसार जानता है। सहस्रों योजन की दूरी पर जो सूर्य स्थित है, आपने मीठा फल समझकर उसका भक्षण कर लिया था।

प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं।
जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं॥
दुर्गम काज जगत के जे ते।
सुगम अनुग्रह तुम्हरे ते ते॥

भावार्थ – श्रीरामजी की अंगूठी मुंह में रखकर आपने समुद्र को लांघ लिया, इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है। संसार में जितने भी दुर्गम कार्य हैं, वे आपका अनुग्रह प्राप्त होने पर सहज और सुगम हो जाते हैं।

राम दुआरे तुम रखवारे।
होत न आज्ञा बिनु पैसारे॥
सब सुख लहहिं तुम्हारी शरना।
तुम रक्षक काहू को डर ना॥

भावार्थ – श्रीरामजी के द्वार के आप रखवाले हैं। इस द्वार में आपकी आज्ञा बिना कोई भी प्रेवश नहीं कर सकता अर्थात आपके अनुग्रह के बिना राम की कृपा प्राप्त करना संभव नहीं है। आपकी शरण में आने वाले प्राणी को सभी प्रकार के आनंद सहज ही प्राप्त हो जाते हैं और जब आप रक्षक हैं, तो फिर किसी प्रकार का भय नहीं रहता।

आपन तेज सम्हारो आपे ।
तीनौं लोक हाँक ते काँपे ।।
भूत पिशाच निकट नहिं आवै ।
महाबीर जब नाम सुनावै ।।

भावार्थ – आपके अलावा आपके वेग को कोई नहीं संभाल सकता और आपकी गर्जना से त्रिलोक प्रकंपित हो जाते हैं। महावीर हनुमानजी का जहां नाम सुमिरण किया जाता है, वहां भूत, पिशाच आदि निकट भी नहीं आ सकते।

नासै रोग हरै सब पीरा ।
जपत निरन्तर हनुमत बीरा ।।
संकट तें हनुमान छुड़ावै ।
मन क्रम बचन ध्यान जो लावै ।।

भावार्थ – वीर हनुमानजी! आपका निरंतर जप करने से सभी रोगों का नाश हो जाता है और सब प्रकार की पीड़ा दूर हो जाती है। मन, कर्म और वचन में जिनका ध्यान आपमें लगा रहता है, उन्हें आप सभी संकटों से मुक्त करा देते हैं।

सब पर राम तपस्वी राजा।
तिन के काज सकल तुम साजा॥
और मनोरथ जो कोई लावै।
सोइ अमित जीवन फल पावै॥

भावार्थ – तपस्वमी राजा श्रीरामजी सर्वश्रेष्ठ हैं और आपने उनके समस्त कार्यों को सहज ही पूर्ण कर दिया। जिस पर आपका अनुग्रह हो और उसकी कोई भी अभिलाषा हो तो उसे ऐसा फल प्राप्त होता है जिसकी जीवन में कोई सीमा नहीं होती।

चारों जुग परताप तुम्हारा।
है परसिद्ध जगत उजियारा॥
साधु सन्त के तुम रखवारे।
असुर निकंदन राम दुलारे॥

भावार्थ – चारों युगों – सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग तथा कलियुग में आपका प्रताप फैला हुआ है और संसार में आपकी कीर्ति सर्वत्र प्रकाशित हो रही है। आप श्रीराम के दुलारे और साधु–संतों की रक्षा तथा दुष्टों का नाश करने वाले हैं।

अष्ट सिद्धि नव निधि के दाता।
अस बर दीन जानकी माता॥
राम रसायन तुम्हरे पासा।
सदा रहो रघुपति के दासा॥

भावार्थ – माता श्रीजानकीजी से आपको ऐसा वरदान प्राप्त है, जिससे आप किसी को भी अष्ट सिद्धि और नव निधि प्रदान कर सकते हैं। आप सदैव श्रीरघुनाथजी की शरण में रहते हैं। आपके पास राम–नाम का रसयान भी है, जो बुढ़ापा और असाध्य रोगों का नाश करने वाला है।

तुम्हरे भजन राम को पावै।
जनम जनम के दुःख बिसरावै॥
अन्त काल रघुबर पुर जाई।
जहाँ जन्म हरि–भक्त कहाई॥

भावार्थ – आपका भजन–कीर्तन करने से श्रीरामजी सरलता से प्राप्त हो जाते हैं और भक्तों के जन्म–जन्मांतर के दुख दूर हो जाते हैं। ऐसे मनुष्य अंतकाल में श्रीरामजी के धाम जाते हैं और यदि फिर भी मनुष्य योनि में जन्म लेंगे तो भक्ति करेंगे और श्रीराम–भक्त कहलाएंगे।

और देवता चित्त न धरई।
हनुमत् सेई सर्व सुख करई।।
संकट कटै मिटे सब पीरा।
जो सुमिरै हनुमत बलबीरा।।

भावार्थ – हनुमानजी की सेवा करने से सभी प्रकार के सुख प्राप्त हो जाते हैं, इसके बाद अन्य किसी देवता का ध्यान करने की आवश्यकता नहीं रहती। जो मनुष्य हनुमानजी का स्मरण करता रहता है, उसके सभी संकट समाप्त हो जाते हैं और सभी पीड़ा दूर हो जाती है।

जय जय जय हनुमान गौसाईं।
कृपा करहु गुरुदेव की नाईं।।
जो सत बार पाठ कर कोई।
छूटहि बंदि महासुख होई।।

भावार्थ – हे स्वामी हनुमानजी! आपकी जय हो, जय हो, जय हो! आप मुझ पर श्रीगुरुदेव के समान अनुकंपा कीजिए। जो मनुष्य इस हनुमान चालीसा का सौ बार पाठ करेगा, उसे सभी प्रकार के बंधनों से मुक्त मिल जाएगी और वह परमानंद को प्राप्त करेगा।

जो यह पढ़ै हनुमान् चालीसा ।
होय सिद्धि साखी गौरीसा ।।
तुलसीदास सदा हरि चेरा ।
कीजै नाथ हृदय महँ डेरा ।।

भावार्थ – यह हनुमान चालीसा भगवान शिवजी ने लिखवाया है। अत: वे साक्षी हैं कि जो इसका पाठ करेगा, उसे अवश्य ही सफलता प्राप्त होगी। हे स्वामी हनुमानजी! तुलसीदास सदैव श्रीराम का सवेक रहा है। अत: आप उसके हृदय में वास कीजिए।

।। दोहा ।।

पवनतनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप ।
राम लखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप ।।

भावार्थ – हे संकटहारी हनुमानजी! आपका स्वरूप कल्याणकारी है। हे सुरभूप! आप श्रीराम, सीताजी और लक्ष्मणजी सहित मेरे हृदय में वास कीजिए।